## कवि ऋषभदासरचित

# श्रीमहावीरजिनस्तवन

सं. विजयशीलचन्द्रसूरि

कवि ऋषभदासनी एक अप्रकट रचना 'महावीरजिनस्तवन' अत्रे प्रकाशित थाय छे. कर्ताए स्वहस्ते लखेल त्रण पानांनी प्रतिने आधारे आ सम्पादन करवामां आव्युं छे. ४१ कडी प्रमाण आ स्तवन सं. १६६६ना दीवालीदिने त्रंबावती-खंभातमां रचायेलुं छे. ते समये बोलचालना व्यवहारमां प्रयोजाती भाषानो उपयोग थयेलो आ कविनी रचनाओमां सर्वत्र जोवा मळे छे; भाषा अने बोलीना ए प्रयोगो भाषाशास्त्रना तथा बोलीओना अभ्यासी जनो माटे उपयोगी होई शके.

### श्रीमहावीरस्तवन ॥

ढाल ॥ वंछीतप(पू)रण मनोहरू ॥ राग-शामेरी ॥

सरसति सांम्यणि पाइ नमुं, श्रीजिन-गुरूवचने रमुं,
नीत्य नमुं वर्धमांन चोवीसमो ए ॥१॥
सीधारथ-कुलि दीवो ए, त्रीसलानंदन जीवो ए,
जीवो ए ए नहइसार तणो वली ए ॥२॥
चईत्र स(सु)कल तेरश दीनिं, प्रभु जनम्यो अति स्युभलगनिं,
बहु धनिं राय सीधार्थ वाधीओ ए ॥३॥
राजरमणि सूख भोगवइ, पंच वीषइ सूख जोगवइ,
संयमसमइ लोकांतीक सूर ते कहइ ए ॥४॥
दानसंवछरी देई करी, संयमरमणी तीहा वरी,
ऊलट धरी दीक्षामोहोछव सूर करइ ए ॥५॥
संयम चोखुं पालतो, कर्म कठणनिं गालतो,
टालतो घनघाती कर्म च्यारनिं ए ॥६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल ॥ एणी परि राय करंता रे ॥

च्यारे चीकणां करम रे, नाणांवरणीअ
कर्म कठण जे दंसणां ए ॥७॥
मोहनी निं अंतराय रे, ए पणि खइ करइ
तव अरीहा केवल वरइ ए ॥८॥
समोवसर्ण सुर सार रे, रचता रंगस्युं
त्रणि वप्रस्यु पीठिका ए ॥९॥
रयण सीघासण च्यार रे, च्यार धजा सही
चामर वीजइ च्योहो गमां ए ॥१०॥
भामंडल जिन पूठ्य रे, अशोष तरु सही
वीस हजार गढि पगथीआ ए ॥११॥
च्यार पूखरणि वाव्य रे, समोवसरण धरिं
अढी कोस ऊंचूं सही ए ॥१२॥

❋

दूहा ॥

वर्धमांन जीन त्यांहा ठवी, करता वचन प्रकास ।
सकल गुणे करी दीपतो, अतीसहइ चोतीस तास ॥१३॥

ढाल ॥ दइ दइ दरीसण आपणूं ॥ राग-गोडी ॥

अतीसहइ चोतीस जीनतणा, प्रथमइ रुप अपार रे ।
रोग रहीत तन नीरमलुं, चंपकगंध सुसार रे ॥
त्रु० ॥ सार चंपक तन सुगंधी भमर भंगि त्याहा भमइ
सास निं उसास सुंदर, कमलगंधो मुख्य रमइ ।
रुधीर मंश गोखीरधारा, अद्रीष्ट आहार नीहार रे
सहइजना ए च्यार अतीसहइ, करमघाति अग्यार रे ॥१४॥
समोवसर्ण्य बारइ परषदा, जोयन मांह्य समाय रे ।
वाणी जोयनगाम्यणी, बुझइ सूर नर राइ रे ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[त्रु०] राय बुझ[इ] रव्य सरीखुं भामंडल पूंठि सही
जोअण सवो(वा) सो लगिं भाई रोग नीसइ ते नही ।
सकल वइर पणि वलि जाइ, सातइ ईत समंत रे
मारि मरगी नहीअ नीसइ, अतीवृष्टी नवी हंत रे ॥१५॥
अनवृष्टी नही जिन थकइ, दूरभष्य नही ज लगारो रे ।
स्वचक्र-परचक्र-भइ नही, ए गुण जुओ अग्यारो रे ॥

त्रु० ॥ अग्यार गुण ए केवल पामइं सुर-कीआ ओगणीस रे
धर्मचक्र आकाश चालइ चामर दो नतिदीस रे ।
रत्नसीघासण पादपीठि छत्र त्रणि सही सीस रे
इंद्रधज आकाश-ऊंचो जुओ जिनह जगीस रे ॥१६॥
परमेस्वर पग ज्यांहां ठवइ, कमल धरइ नव षेवो रे ।
रूप कनक मणि रत्न मइ तीन रचइ गढ देवो रे ॥

[त्रु०] देव गढ त्रणि रचइ रंगइं समोवसर्ण्य चोरूप रे
अशोषतरु तली वीर बइसइ जुओ जीनह सरूप रे ।
अधोमुखि त्याहा कहुं कंटिक सकल वीरष नमंत रे
दूदभी आकाश वाजइ शबद सहुअ गमंत रे ॥१७॥
पवन फरुकइ कुअलों अतीझीहीणो अनकुल रे ।
पंखी दइ परदक्षणा, स्युकन वदइ मुख्य-मुल रे ॥

त्रु० ॥ मुल मुख्यथी स्युकन बोलइ सूगंधि वीष्ट सोहामणी
सूर सोभागी सोय वरसइ पुफवीष्ट होइ घणी ।
समोसरणि पंचवरणां पूफ ते ढीचणसमइ
नख केस रोमह ते न वाधइ सूर कोडि त्याहां रंगि रमइ ॥
इंद्रोनिं अनुकुल होइ षट् सोय रति सोहामणि
चोतीस अतीसहइ वीर केरा वीर शोभा अत्यघणी ॥१८॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा ॥

वंदू वीर भगवंतनिं, नही जस लोभ लगार ।
क्रोध मांन माया नही, टाल्यां दोष अढार ॥१९॥

ढाल ॥ भवीजनो मति मुको जीनध्यानिं ॥ राग-शामेरी ॥

दोष अढार जे जीन कह्या, ते नही अरीहा पासइ रे ।
ज्युं मृगपति देखी मदिमातो, मेगल सो पणि न्हासइ रे ॥
कवीजनो, गुण गाओ जीन केरा, आल पंपाल म म ऊचरो
जस म म बोलो अनेरा रे, कवीजनो, गुण गायो जीन केरा ॥ आचली ॥२०॥

दान दीइ जीन अतीघणुं, को न करइ अंतराइ रे ।
लाभ घणो जीनवर तुझ जाणुं, बहु प्रतिबोध्या जाइ रे ॥ क० ।२१॥

अंतराय जीन नइं नही, वीरयाचार वसेषो रे ।
तप जप तुं संयम जिन पालइ, आलस नही तुझ रेखो रे ॥क० ।२२॥

भोग घणो भगवंतनइं, अनइ वली अवभोगाइ रे ।
केसर चंदन अंग्य वलेपइ, समोवसरण तुझ थाइ रे ॥क० ।२३॥

हाशवीनोध क्रीडा नही, रति-अरती नही नामो रे ।
भइ-दूगंछा जिन नवि राखइ, शोष अनिं नही कामो रे ॥क० ।२४॥

मीथ्या मुख्य नवी बोलवुं, जीननिं नही अग्यनांनो रे ।
नीद्रा नही नीसइ सही जाणो, अवरत्यनिं नही मांनो रे ॥क० ।२५॥

रागद्वेष जेणइ जीपीआ, साधइ सीवपूर वाटो रे ।
जे षट्काई हुओ रखवालों, जेणइ छंड्या मद आठो रे ॥क० ।२६॥

❋

ढाल ॥ नंदनकु त्रीसलां हुलरावइ ॥

आठइ मद जे मेगल सरीखा, जीन जीपी जीन वारइ रे ।
मान थकी गति लहीइ नीची, पंडीत आप वीचारइ रे ॥
आठइ मद जे मेगल सरीखा ॥२७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जातिगरभ नव्य कीजइ भाई, लाभतणो मद तजीइ रे ।
उंच कुंलांनुं मांन करंतां, नीचकुलां जइ भजीइ रे ॥आ० ।२८॥

प्रभुता निं ए बल मद वारो, रूप मान एकमनो रे ।
सनतकुमार जुओ जगि चकवइ, अंगि रोग उंपनो रे ॥आ० ।२९॥

तप मद करतां पूण्य पलांइ, श्रुतमद मुरिख थाईइरे ।
कहइ जीनराज सूणो रे लोगां, चोखइ च्यंति रहीइ रे ॥आ० ।३०॥

❋

ढाल ॥ कहइणी करणी तुझ व्यण साचो ॥

आठि मद जीप्या जीन वीरइं, कीधो जगह प्रकासो जी ।
शंघ चतुरवीध्य स्वामी थापइ, हरी लावइ तीहा वासो जी ।
आठइ मद जीप्या जीन वीरइं ॥ आचली ॥३१॥

चउंद हजार मुनीवर अतीमोटा, गणधरवर अग्यारो जी ।
छत्रीस हजार अजीआ त्यांहा दीखी, निरमल जस आचारोजी ॥आ०।३२॥

एक लाख उंपरि वली भाषुं, ओगणसठि हजारो जी ।
श्रावक वीरतणा ए वारू, नीपण सूखी दातारो जी ॥आ०।३३॥

सूलसा परमुख त्रण्यं लष्य कहीइ, अज्जकी सहइस अढारो जी ।
वीरतणी ए सुदर श्रावीका, सती सरोमणि सारो जी ॥आ० ।३४॥

ए परीवार श्रीजिनवर केरो, नमीइ बइ कर जोड्योजी ।
शंघ चतुरवीधि स्वामीकेरो, तपज्यो सागर कोड्यो जी ॥आ० ।३५॥

अनुंकरमिं प्रभु वीहार करंता, आरय अनारय देसो जी ।
पापानगरी माहइं पोहोता, टालइ काय कर्लो(ले)स्यो जी ॥आ० ॥३६॥

नामकरम निं बीजु आउंषुं, वेदनी गोत्र वीचार्यो जी ।
च्यारे कर्मनिं वीर खेपवी, पोहोता मुगत्य मझार्यो जी ॥आ० ३७॥

**संवत अंग[६] अंग[६] अंग[५] चंदि[१]** आसो मास दीवालीजी ।
श्रीगुरुवारि **त्रंबवती** म्हां, **थंभण पास** नेहालीजी ॥आ० ।३८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भावि भगति चरम जिनेस्वर, स्तवीओ बहु सुखकारीजी ।
राजरीधि सुख संपति पामइ, सुणिय को नरनारी जी ।
आठइ मद जीप्या जीन वीरि, कीधो जगह प्रकासो जी ॥३९॥

कलस ॥

करी **प्रकास** जिन मुगति पोहोता, वर्धमांन नरवीर रे
शास्यन जेहनुं आज वरति नीरमल गंगानीर रे ॥४०॥

**तपगछ** साचो देखी राचो **वीजइ सेनसूरि** गछधणी ।
**सागणनो सूत ऋषभ** पभणइ वीर नांमि ऋधि घणी ॥४१॥

इती वीरस्तवन संपूरण ॥

## केटलाक शब्दो

**कडी**

| | | |
|---|---|---|
| २ | नहइसार | नयसार (महावीर स्वामीनुं प्रथम जन्मनुं नाम) |
| ४ | लोकांतीक | देवजातिनुं नाम |
| ११. | अशोष | अशोक (वृक्ष) |
| १२ | पूखरणि | पुष्करिणी |
| १३ | अतीसहइ | अतिशय |
| १४ | भंगि | भृंग |
| १५ | ईत | ईति=उपद्रवो |
| १६ | दूरभष्य | दुर्भिक्ष |
| १७ | वीरष | वृक्ष |
| १८ | कुअलों | कोमल |
| १८ | मुख्यमुल | मुखना मूळथी-मों वडे |
| १८ | सूर | सुर-देव |
| २० | मेगल | मयगल-हाथी |

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

| | | |
|---|---|---|
| २३ | अवभोगाइ | उपभोग |
| २४ | हाशवीनोध | हास्य विनोद |
| २४ | भइ | भय |
| २५ | नीसइ | निश्चे-निश्चयथी |
| २६ | षट काई | छ जीव-काय |
| २८ | जातिगरभ | जातिगर्व |
| २९ | चकवइ | चक्रवर्ती |
| ३० | च्यंति | चित्ते |
| ३२ | अजीआ | आर्या-साध्वी |
| ३३ | नीपण | निपुण |
| ३५ | सागर कोड्यो | क्रोडो सागरोपम सुधी (कालविशेष) |

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org